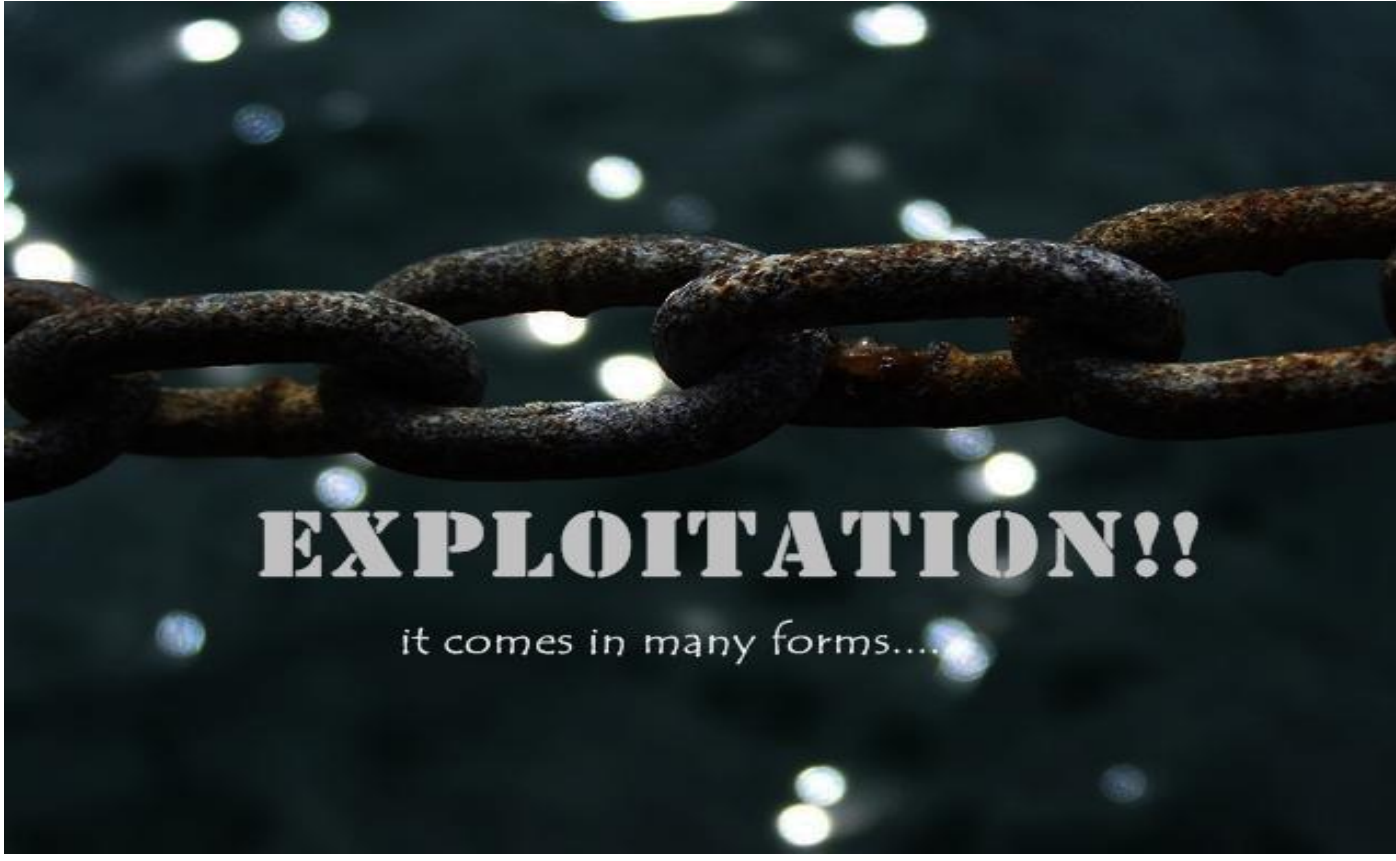


## विदेशी कंपनियों का झूठ!



एक ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत को 350 सालों तक गुलाम बना कर रखा। आज ऐसी 5000 से अधिक ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में अपना व्यापार कर रही हैं! इन सभी कंपनियों और ईस्ट इंडिया कंपनी में एक समानता थी जिसे समझना हर भारतीय का कर्तव्य है क्योंकि हम ही इन कंपनियों का बाजार हैं। प्रस्तुत लेख भाई राजीव दीक्षित जी के एक भाषण का लिखित स्वरूप है जिसमें मुख्य बिंदुओं की संक्षेप में चर्चा की गई है। आप इस व्याख्यान को श्रद्धेय भाई राजीव जी के श्रीमुख से नीचे दिए गए लिंक पर भी सुन सकते हैं।

ऑडियो लिंक :

जब ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में व्यापार करने के लिए घुसी, उस समय मुगल सम्राट औरंगज़ेब का शासन था। औरंगज़ेब ने ईस्ट इंडिया कंपनी को सूरत में भूमि का एक खंड दिया व्यापार जमाने के लिए। इस कंपनी ने पहले सूरत के बाजार और फिर पूरे सूरत पर अपना वर्चस्व कायम कर लिया। धीरे-धीरे इस कंपनी ने भारत के प्रमुख शहरों को अपने कब्जे में ले लिया। 1750 तक आते-आते तो कंपनी ने यह औपचारिक रूप से घोषित कर ही दिया था कि उनका दबदबा भारत के शहरों पर काबिज़ हो चुका है! 1757 के प्लासी के युद्ध से लेकर 1815 के वाटरलू के युद्ध तक अंग्रेज़ों ने भारत से 15000 करोड़ रूपए लूटकर ब्रिटिश शासन के चरणों में अर्पित किए, जबकि वे अपने साथ केवल 50000 ब्रिटिश पौंड का ही निवेश लेकर आए थे!

भारत को लूटने के लिए ब्रिटिश सरकार तरह-तरह के अधिनियम और चार्टर बनाया करती थी जिनकी मदद से ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में अपने व्यापारिक और राजनैतिक मंसूबों को अंजाम देती थी। ऐसा ही एक चार्टर पास हुआ ब्रिटेन की संसद में सन 1813 में। इस चार्टर में ईस्ट इंडिया कंपनी को कई तरह की सुख सुविधायें दी गईं। इस चार्टर के तहत कंपनी ने जो व्यापार किया उसके आँकड़े यह हैं:

- भारत जो 17वीं शताब्दी तक विश्व का सबसे बड़ा व्यापारिक तथा औद्योगिक केन्द्र था, 1890 के आते-आते एक भिखारी देश बन गया!
- अंग्रेज़ों ने जो संपत्ति भारत से लूटी, उससे ब्रिटेन में हज़ारों आविष्कार हुए जिनसे ब्रिटेन एक आधुनिक देश के रूप में उभरा।

- इसी लूटे हुए धन से ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति हुई और वह तकनीकी रूप से विकसित हुआ।

जब भारत आज़ाद हुआ तो लोगों को इस बात की खुशी हुई कि चलो एक विदेशी कंपनी और हुकूमत से मुक्त हुए, परंतु सच्चाई कुछ और ही निकली। भला हो हमारे देश के सौदागरों का जिन्होंने भारत की आज़ादी के बाद अपनी सारी नीति विदेशी कंपनियों की चाटुकारिता के लिए बनायीं ताकि वे भारत को और भी जमकर लूट सकें! 1991 में भारत ने मुक्त व्यापार नीति के तहत अपने द्वार विदेशी कंपनियों के लिए खोल दिए। भारतवासियों का पहले बार globalization नाम के शब्द से पाला पड़ा। 1947 से लेकर 1991 तक भारत में केवल 150-200 विदेशी कंपनियाँ ही थीं जबकि 1991-1996 के मध्य 3000 से ज्यादा विदेशी कंपनियों को घुसा लिया गया, देश के हर क्षेत्र में व्यापार करने के लिए। सारा विश्व जानता है कि भारत और चीन विश्व के सबसे बड़े बाज़ार हैं क्योंकि इन देशों में जनसंख्या बहुत अधिक है। ऐसे में भारत के मूर्ख नीतिज्ञों ने यह सोचा कि यदि हम व्यापार करने के लिए विदेशी कंपनियों को बुलाते हैं तो हम चीन से अधिक शक्तिशाली हो सकेंगे। वहीं चीन केवल निर्यात करता है परंतु आयात न के बराबर ही करता है। उसकी सारी नीति स्वदेशीकरण पर आधारित है। इन दोनों ही देशों की नीतियों के नतीजे आज पूरे विश्व के सामने हैं। एक है भारत जिसकी मुद्रा की वैश्विक बाज़ार में कोई हैसियत नहीं है और जहाँ के 80% लोग गरीबी रेखा से नीचे हैं तो दूसरी ओर है चीन जो राजनैतिक, सैन्य, व्यापारिक दृष्टि में हमसे न केवल मीलों आगे है बल्कि पूरे विश्व के निर्यात में अपनी 26% भागीदारी भी रखता है! आप में से कई लोग यह भी जानते होंगे कि संयुक्त राष्ट्र संघ में चीन को एक सम्मानजनक स्थान प्राप्त है, वहीं भारत जैसे देश गौण कहे जाते हैं!

भारत में विदेशी पूँजी निवेश के समर्थक निम्नलिखित तर्क देते हैं:

1. भारत में विदेशी निवेश से पूँजी आती है जो राष्ट्रीय कोष को बढ़ाती है।
2. भारत में विदेशी निवेश से नयी तकनीकें आती हैं।
3. विदेशी निवेश से भारत में रोज़गार के अवसर बढ़ते हैं।
4. चूँकि विदेशी निवेश से नयी तकनीकें भारत में आती हैं, तो इससे भारत का विश्व में निर्यात भी बढ़ता है।

अब अगर नज़र डालें कुछ आंकड़ों पर तो हमें पता चलता है कि भारत सरकार ने 1991 में 92,556 करोड़ रुपये का विदेशी निवेश प्रस्ताव पारित किया।

1991-1996 तक जो विदेशी पूँजी भारत में आई वो थी मात्र 19,479 करोड़ रुपये अर्थात् केवल 20%! इस पूँजी में से भी अधिकांश हिस्सा हार्ड मनी के रूप में भारत आया। हार्ड मनी वो पैसा होता है जो सट्टा बाज़ार, जिसे शेयर मार्केट भी कहते हैं, में लगता है। ये पैसा कोई उत्पादन नहीं करता यानी ये पैसा आप देश के विकास कार्यों में नहीं लगा पाते। ये पैसा आज भारतीय सट्टा बाज़ार में होगा तो कल किसी और देश के बाज़ार में होगा। यह ऐसे ही घूमता रहता है। बड़ी बड़ी कंपनियों को इस पैसे का लाभ मिलता है और आम निवेशक के हिस्से में आती है धूल!

1980-1989 के बीच भारत में 11,453 करोड़ की विदेशी पूँजी आई और भारत से 13,930 करोड़ की पूँजी ले गई। जुलाई 1991 से लेकर नवम्बर 1996 के मध्य में 19,479 करोड़ का विदेशी निवेश भारत में आया और यहाँ से 34,240 करोड़ का मुनाफा कमाकर विदेश ले गया! नीचे कुछ विदेशी कंपनियों के उदाहरण दिए गए हैं जो समय समय पर भारत में आयीं और आज उनकी कितनी बढ़ोत्तरी हुई:

- Hindustan Unilever: 24 लाख की पूँजी के साथ भारत आई और 1995 तक इसका कुल मुनाफा था 563 करोड़ रुपए। प्रतिवर्ष 240 करोड़ से अधिक का मुनाफा।
- Colgate Palmolive: 1,50,000 रुपए से अपना व्यापार आरम्भ किया और 1996 तक 187 करोड़ की संपत्ति। प्रतिवर्ष 77 करोड़ का मुनाफा।
- Bata: 1947 में 70 लाख रुपए से व्यापार शुरू किया और 1996 तक 115 करोड़ का शुद्ध मुनाफा।
- Sivage: 48 लाख रुपए से व्यापार शुरू किया। 1996 तक 176 करोड़ रुपए का शुद्ध मुनाफा। प्रतिवर्ष 23 करोड़ का मुनाफा।
- Johnson & Johnson: 1957 में 24 लाख की पूँजी के साथ व्यापार शुरू किया और आज करोड़ों का शुद्ध मुनाफा।
- Bayer: 1947 3 करोड़ 76 लाख से व्यापार शुरू किया और प्रतिवर्ष 44 करोड़ का मुनाफा है।
- German Remedies: 1949 में भारत आई 68 लाख की पूँजी के साथ और प्रतिवर्ष 50 करोड़ का मुनाफा कमाती है।
- Pepsi: 90 के दशक में भारत आई 40 करोड़ की पूँजी के साथ और 1995 तक का मुनाफा था 240 करोड़ रुपए।

ऐसी 5000 से अधिक कंपनियाँ हैं भारत में जो बहुत ही कम पूँजी लेकर आयीं और यहाँ से बेहिसाब मुनाफा कमाकर ले गईं या ले जा रही हैं। ये कंपनियाँ भारत में आकर यहाँ के ही वित्तीय संस्थानों और बैंकों से कर्ज़ लेकर व्यापार करती हैं और पहले ही वर्ष में औसतन अपनी लायी हुई संपत्ति का 3 गुणा बाहर ले जाती हैं। इसका सीधा सा मतलब है कि विदेशी कंपनियों के बाहर से आने पर पूँजी आती नहीं है बल्कि यहाँ से बाहर चली जाती है।

एक और भ्रम जो फैलाया जाता है कि विदेशी कंपनियों के आने से नयी तकनीक आती है। सच तो यह है कि अधिकतर विदेशी कंपनियाँ शून्य तकनीक से बने उत्पाद बना कर हमें चिपकाती हैं जैसे मसाले, नमक, साबुन, तेल, शेम्पू, कपड़े, आटा, चटनी, अचार आदि। विदेशी कंपनियाँ कभी भी अपने साथ वो तकनीक नहीं लातीं जो विदेशों में नवीनतम हों, वे हमेशा पुरानी बहिष्कृत तकनीक भारत में लेकर आती हैं क्योंकि उनका उद्देश्य लाभ कमाना होता है, भारत को शक्तिशाली बनाना नहीं!

कुछ लोग मानते हैं कि विदेशी कंपनियाँ उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद बनाती हैं और भारतीय सामान उनके आगे नहीं टिकता। यह एक मानसिक भ्रम है जिसका दूर होना परमावश्यक है। उदाहरण के तौर पर टूथपेस्ट को ही लीजिए। इसमें एक तत्व होता है जिसे DiCalcium Phosphate कहते हैं (आयुर्वेदिक पेस्ट को छोड़कर)। यह मरे हुए जानवरों की हड्डियों से निकाला जाता है। अब पेस्ट को करने के लिए टूथब्रश की भी जरूरत पड़ती है जिसमें वैज्ञानिकों के अनुसार 15 दिनों के बाद कीटाणु पैदा होने लगते हैं। इस सामान को बेचने के लिए कंपनियाँ यह विज्ञापन देती हैं कि ब्रश कीजिए वरना दाँतों में सड़न पैदा होने लगेगी, इस पेस्ट को कीजिए इसमें नमक है आदि। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि इन्हीं विदेशों में हुई शोध से पता चला है कि उंगली से किए हुए मंजन से जो मजबूती आपके मसूड़ों और दाँतों को मिलती है, वो कभी भी पेस्ट और ब्रश से नहीं मिल सकती! जिन देशों में पेस्ट और ब्रश सर्वाधिक इस्तेमाल होता है, वहीं दाँतों के सबसे अधिक रोगी पाए गए हैं! जब भारत में पेस्ट नहीं था तो लोगों के मुँह से क्या बदबू आती थी या उनके दाँत खराब रहते थे?

दूसरे राष्ट्र कभी भी किसी दूसरे देश को नयी तकनीक नहीं देते। जब भारत को cryogenic इंजिन चाहिए था तब अमरीका ने साफ़ साफ़ माना कर दिया था। उसके बाद जब भारत रूस के पास गया तो रूस यह इंजिन देने को राजी हो गया। जब इंजिन भारत में लाने की तैयारियां चल रही थीं, तब अमरीका ने भारत पर आर्थिक दबाव डाला कि हम रूस से इंजिन न लें। इसी अमरीका ने सुपर कंप्यूटर देने से भी भारत को मना कर दिया था। उसके बाद भारत के वैज्ञानिकों ने दिन-रात एक करके स्वदेशी सुपर कंप्यूटर 'परम 3000' बनाया।

विदेशी कंपनियाँ विज्ञापनों के जरिए केवल अपना ब्रांड या अपना नाम बेचती हैं! विज्ञापनों पर करोड़ों रूपए खर्च करके हर 10-15 मिनट में बार बार एक ही उत्पाद दिखाया जाता है। इस पुनरावृत्ति के कारण कंपनी का नाम हमारे मस्तिष्क में बैठ जाता है। इन विज्ञापनों ने हमारे समाज में एक भ्रम फैला रखा है कि जिस चीज़ का विज्ञापन नहीं, वो बेकार होती है! इसी भ्रम का नतीजा है कि हमारी आज की पीढ़ी में रीढ़ की हड्डी नहीं पायी जाती! कई माताएँ (खासकर शहरों में) अपने बच्चों को पाव रोटी और horlicks पर पाल रही हैं, कोल्ड ड्रिंक पीकर कैंसर और मधुमेह को दावत दे रहे हैं तथा विदेशी कृत्रिम सौंदर्य प्रसाधन लगाकर त्वचा रोगों को बढ़ा रहे हैं। हम यह चीज़ भूल जाते हैं कि जो कुछ भी मनुष्य को चाहिए, वो सब कुछ प्रकृति ने हमें दिया है। हम तो उस भारत के वासी हैं जहाँ पर हमें इन शोधों को करने की आवश्यकता ही नहीं कि अमुक जड़ी बूटी या रसायन क्या प्रभाव रखता है। यह सब ज्ञान हमें विरासत में ही प्राप्त है लेकिन हम उस पर विश्वास इसीलिए नहीं करते क्योंकि इन वस्तुओं का विज्ञापन नहीं आता! कभी आपने सुना है जलजीरे, नीम्बू पानी

और बेल के रस का विज्ञापन? परंतु आप सभी जानते हैं कि लाभ इन्हीं प्राकृतिक पदार्थों में निहित है।

प्राकृतिक संरचना के अनुसार, मनुष्य का शरीर oxygen लेता है और carbon di oxide छोड़ता है। हमारे हर रोम से carbon di oxide बाहर निकलती रहती है क्योंकि इसकी हमारे शरीर को इतनी आवश्यकता नहीं होती। कोल्ड ड्रिंक में carbon di oxide की मात्रा अधिक होती है इसीलिए इसे carbonated drink भी कहा जाता है। यह carbon di oxide ही होती है जो आपके पेट में जाने के बाद नाक में चढ़ने लगती है। इसे आप जबरदस्ती अपने शरीर में डालते हैं जिसके फलस्वरूप शरीर अपनी प्रतिक्रिया सनसनाहट के रूप में देता है। इसमें 23 तरह के ऐसे विषैले पदार्थ होते हैं जो इसे धीमा जहर बनाते हैं! ऐसी चीज़ कम से कम quality product तो नहीं कही जाएगी। परंतु फिर भी हम ही लोग पेप्सी और कोका कोला जैसी कंपनियों को हर साल 240 करोड़ रूपए कमा कर देते हैं ताकि वे हमसे पैसे लेकर हमें बीमार करें और फिर उसी पैसे से अपने देश की उन्नति करें!

यदि हमें अपने देश को इस विदेशी लूट से बचाना है तो उसका एक ही रास्ता है। यह वही रास्ता है जिसने ब्रिटिश सरकार पर सन 1905 में दबाव बनाया था जिसके चलते ब्रिटेन की सरकार को बंग भंग का फैसला वापस लेना पड़ा था। यह बहुत ही आसान रास्ता है जिसके लिए अब हमको सड़कों पर भी उतरने की आवश्यकता नहीं है। यह मार्ग है स्वदेशी का! स्वदेशी वस्तुओं के उपभोग का। हमें सचेत होना होगा कि हमारी आवश्यकता की वस्तु स्वदेशी है या नहीं। यदि स्वदेशी नहीं है तो हमें वहीं उसका बहिष्कार कर देश का धन देश में ही रखना होगा। वर्तमान सरकार से तो उम्मीद रखना मूर्खता ही होगी क्योंकि उन्हीं का



बोया अब हमारा देश काट रहा है। अब हम सभी को आगे आना होगा अपने देश को बचाने के लिए!

जय भारत! जय स्वदेशी!

